# मिडिया कवरेज

दैनिक भास्कर
12 शुक्रवार, 29 अगस्त 2025 लखनऊ

## नैनो उर्वरकों के प्रयोग से मिट्टी की गुणवत्ता भी अच्छी होगी : ब्रजवीर सिंह

**पीलीभीत (ब्यूरो)।** किसान सभा में कृषकों को नैनो उर्वरक के प्रयोग से फसल में कम लागत आने की जानकारी दी गई। इसके साथ ही जमीन की सेहत में सुधार होना बताया गया है। बी-पैक्स- सहकारी समिति सुल्तानपुर गाँव निजामपुर में समिति अध्यक्ष वीरेंद्र वर्मा की अध्यक्षता में एक किसान सभा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कृषि विज्ञान केंद्र टांडा विजैसी पीलीभीत के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर शैलेंद्र सिंह ढाका रहे। उप महा प्रबंधक विपणन इफको पीलीभीत ब्रजवीर सिंह, डॉ० अशोक चैधरी भूमि संरक्षण निरीक्षक पीलीभीत,एस एफ ए,अंकुर कुमार, समिति के सचिव ओंकार नाथ दूबे उपस्थित थे। किसान सभा में उप महाप्रबंधक विपणन इफको पीलीभीत ब्रजवीर सिंह ने नैनो उर्वरकों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने कहा कि नैनो उर्वरकों के प्रयोग से किसान कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। दानेदार उर्वरकों की अपेक्षा, नैनो उर्वरक सस्ते भी पड़ते हैं। नैनो उर्वरकों के प्रयोग से मिट्टी की गुणवत्ता भी अच्छी बनी रहती है। कृषि विज्ञान केंद्र पीलीभीत के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर शैलेंद्र सिंह ढाका ने धान, गेहूँ, गन्ना, एवं मक्का आदि फसलों पर लगने वाले कीट एवं बीमारियों से बचाव पर जानकारी दी।

कार्यक्रम में कृषि विभाग से डॉक्टर अशोक चौधरी व एस० एफ०ए०, अंकुर कुमार ने भी किसान सभा में नैनो कॉपर, नैनो जिंक, एवं जल विलय उर्वरकों पर जानकारी दी। कार्यक्रम में करीब 60-70 किसान मौजूद रहे।

खरी कसौटी लखनऊ, शुक्रवार, 17 जनवरी 2025 पीलीभीत/शाहजहांपुर/बहराइच/अम्बेडकरनगर/सुल्तानपुर

### संक्षिप्त खबरें

#### सदर तहसील से जुड़ेंगे बल्दीराय के 32 गांव, शासन से मिली हरी झंडी

सुलतानपुर। बीजेपी की योगी सरकार जिले के हजारों लोगों को नए साल में बड़ा तोहफा देने की तैयारी कर ली है। जिस पर सीएम योगी ने भी मुहर लगा दी है। अब शासन से हरी झंडी मिलने के बाद जल्द ही सदर तहसील से कटकर बल्दीराय तहसील में जुड़े 32 गांव के लोगों के घर वापसी की तैयारी शुरू कर दी जाएगी। बीते 10 जून 2016 को बल्दीराय को जिले की पांचवी तहसील का दर्जा मिला था। जिसके बाद कूरेभार और धनपतगंज ब्लाक क्षेत्र के उन 29 गांवों को बल्दीराय में शामिल कर लिया गया,जो सदर तहसील से नजदीक थे। ऐसे में कलखुरा महमूदपुर, बहादुरपुर, प्रतापपुर,सराय गोकुल,अमऊ, धर्मदासपुर, बरियौना समेत 32 गांव के लोग न चाहते हुए भी बल्दीराय का चक्कर काटने लगे। उल्टी चाल से तंग ग्रामीणों ने कई बार स्थानीय व शासन स्तर पर पत्राचार किया था। सरकार कैसे निर्णय से लोगों ने खुशी व्यक्त की है।

#### प्रतिबंधित पशुओं का वध

### बासमती खेती को बढ़ावा देने हेतु जैविक बासमती खेती प्रमाणन कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन

## बासमती की पैदावार और निर्यात की जगाई अलख

खरी कसौटी ब्यूरो

पीलीभीत। भारत सरकार के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्रालय के केंद्रीय राज्य मंत्री जितिन प्रसाद की पीलीभीत जनपद लोकसभा क्षेत्र बासमती की खेती उसकी उत्पादकता और बासमती के निर्यात मैं पीलीभीत जनपद के किसानों की हिस्सेदारी अपेक्षा से अधिक कई गुना बढ़ाने और किसने की आय को कई गुना बासमती निर्यात विकास प्रतिष्ठान द्वारा जैविक बासमती खेती प्रमाणन पर कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

बासमती निर्यात विकास प्रतिष्ठान मोदीपुरम मेरठ के डॉ तरुण बजाज कार्यक्रम का आयोजन किया गया इसमें किसानों को अपने जनपद में बासमती की अधिक से अधिक खेती करने के लिए जैविक बासमती खेती के लिए वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने कीटनाशक और खाद पानी और कटाई तक का पूरे चक्र को वैज्ञानिक ढंग से सरलता से बताने का काम किया गया। उन्होंने कहा कि भारत दुनिया को बासमती चावल के स्वाद और खुशबू से लगातार परिचित कर रहा है भारत की उन्नत क्वालिटी की बासमती का निर्यात दुनिया के 150 से अधिक देशों में किया जा रहा है उन्होंने किसानों के लिए बासमती की खेती करने के प्रति रसायनिकों का प्रयोग के प्रति अनावश्यक प्रयोग के



प्रति सचेत होना पड़े होगा।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक जितेंद्र कुमार दुबे ने जानकारी देते कहा कि उच्च स्तर की खेती करने के लिए और उसके बेहतर निर्यात चक्र को पूरा करने के लिए समूह में काम करने की बहुत जरूरत है एक व्यक्ति अपेक्षाकृत सफलता नहीं पाल सकता कई लोगों का समूह वैज्ञानिक सलाह सरकार की योजनाओं का बेहतर लाभ लेकर उन्नत व्यवसाय को आगे बढ़ाने में सफल रहेंगे।। बासमती निर्यात विकास प्रतिष्ठान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ रितेश शर्मा ने किसानों को बड़े सरल तरीके से छोटी-छोटी उपाय के माध्यम से जैविक बासमती की बेहतर खेती करने, उसका उन्नत बीज तैयार करने और बासमती के निर्यात संबंधी कार्य विषय को विस्तार से बताया। बासमती निर्यात विकास प्रतिष्ठान मोदीपुरम मेरठ के परिचय के साथ किसानों के लिए और बासमती धान की नर्सरी तैयार करने कटाई,मडाई व भंडारण और फसल अवशेष प्रबंधन के बारे में विस्तार से बताया। बासमती के बरेली मंडल में बड़े निर्यातक अमित अग्रवाल ने कहा कि किसान बेखौफ होकर वैज्ञानिक पद्धति से बासमती की जैविक खेती करें। बाजार से 500 रुपये अधिक दाम अधिक पर उनके द्वारा खरीदने का भरोसा दिलाया।साथ ही उन्होंने कहा कि अत्यधिक खाद और कीटनाशक से पैदा की बासमती को रिजेक्ट किया जा रहा है। इसलिए खेती में सावधानी बरतें अधिक उत्पादन करें। कार्यक्रम का संचालन कर रहे वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर एस एस ढाका ने पीलीभीत जनपद बीते 11 वर्षों से जियो टैग मिला हुआ है। पीलीभीत जनपद का सौभाग्य है कि प्रदेश के 20 जनपदों को ही जीओ टैग मिला है। बासमती जोन के उत्पादकता मात्र दशमलव 5% ही है। 138000 हेक्टेयर में धान की खेती होती है। वर्तमान में 6000 हेक्टेयर में ही मात्र बासमती की खेती की जा रही है। कार्यक्रम में बासमती निर्यात विकास प्रतिष्ठान के वैज्ञानिक अधिकारी नेत्रपाल शर्मा,पवन कुमार, जिला उप कृषि निदेशक नरेंद्र पाल, जिला कृषि रक्षा अधिकारी ने भी संबोधित किया। जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि भाजपा के वरिष्ठ नेता सरदार गुरभाग सिंह ने भी वैज्ञानिक पद्धति से कई वर्षों से की जा रही उन्नत खेती के भी बेहतर लाभ का किसानों के सामने उदाहरण प्रस्तुत किया। पीलीभीत लोकसभा क्षेत्र के सांसद और भारत सरकार के वाणिज्य सूचना प्रौद्योगिकी इलेक्ट्रॉनिक विभाग के केंद्रीय राज्य मंत्री जितिन प्रसाद के द्वारा क्षेत्र में पीलीभीत लोकसभा क्षेत्र के बासमती उत्पादन किसानों को बेहतर प्लेटफार्म उपलब्ध कराने की बड़ी कोशिका को अंजाम देने की कार्यवाही अमल में लाई जा रही है।

5 • गुरुवार 18 सितम्बर 2025 पीलीभीत सतरंगी दुनिया हिन्दी दैनिक

## डीएसआर से बदलेगा किसानों का भविष्य

### युवा किसान के कर दिखाया सफल प्रयोग

**राकेश बाबू, पीलीभीत**

मेहनत की जाए तो कोई मंजिल दूर नहीं।किसान परंपरागत खेती को छोड़कर तकनीकी खेती अपनाकर उन्नत खेती की ओर बढ़ रहे है।तकनीकी खेती के माहिर महुआ गांव निवासी युवा प्रगतिशील किसान नवजोत भुल्लर ने डीएसआर पद्धति से धान की खेती को कर दिखाया।नवजोत भुल्लर गन्ना के ब्रांड युवा एम्बेसडर हैं। इनके पिता भी खेती में नवाचार का प्रयोग कर प्रदेश में अपना परचम लहरा चुके हैं।वैसे तो जिले में डीएसआर पद्धति को तेजी से बढ़ावा मिला है।

गजरौला थाना क्षेत्र के गांव महुआ फार्म निवासी प्रगतिशील किसान बाज सिंह भुल्लर के बेटे ने डीएसआर का प्रयोग कर किसानों के लिए नए द्वार खोल दिए।धान की सीधी बुवाई को डीएसआर (डायरेक्ट सीडेड राइस) कहते हैं है, जो की धान लगाने की एक विधि है जिसमें नर्सरी तैयार करने या पौधों को उखाड़कर दोबारा लगाने के बजाय सीड ड्रिल से सीधे खेत में बीज बोए जाते हैं।यह पारंपरिक रोपाई विधि की तुलना में श्रम, समय और पानी की बचत करती है, जिससे खेती की लागत कम होती है और पर्यावरण को भी लाभ होता है।नवजोत के पिता बाजसिंह सिंह भुल्लर प्रदेश में गन्ना का सर्वाधिक उत्पादन लेकर मुख्यमंत्री से सम्मानित हो चुके है। कामरेड वर्तमान में उत्तर प्रदेश किसान सभा के जिला संयोजक है कामरेड बाज सिंह वर्तमान में बरेली मंडल बरेली के गन्ना प्रतियोगिता कमेटी के सदस्य है। नवजोत सिंह भुल्लर ने धान की सीधी बुवाई की जिले में अन्य किसानों के साथ पहल की है। वहीं किसानों से अपील की अगर फसल और नसल बचानी है तो किसान धान की सीधी बुवाई करे। पानी के साथ–साथ हमारी मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बचेगी।

नवजोत भुल्लर ने बताया डीएसआर से कम लागत में आसानी से अधिक पैदावार ले सकते है। खेत की बिना जुताई करें सीड ड्रिल से सीधी बुवाई कर सकते है। 1 एकड़ हाइब्रिड धान में चार पानी, दो स्प्रे,20 किलो डीएपी, 45 किलो एरिया की लागत है और लगभग 120 दिन में पककर तैयार हो जाती है।

**ऐसे होती है डीएसआर में धान बीजों की बोआई:–** डीएसआर के तहत धान की तीन विधि से खेती की जाती है।





ड्राई डीएसआर में अच्छे से तैयार, समतल किए गए सूखे खेत में बीज–कम–खाद बोआई मशीन से बीजों को बोया जाता है। बारिश पर निर्भर क्षेत्रों में बोआई आमतौर पर बारिश होने से पांच–सात दिन पहले की जाती है, जिससे फसल बारिश के साथ या बाद मे सिंचाई होने पर अंकुरित हो सके।खरपतवार की शुरुआती समस्या से बचने के लिए बोआई के बाद सिंचाई करके पेंडीमेथालिन नामक खरपतवारनाशक का छिड़काव किया जाना जरूरी है। तरबतर डीएसआर में बोआई से पहले खेत में अच्छी सिंचाई की जाती है।

इस विधि में पहली सिंचाई 15–21 दिनों बाद की जा सकती है। वेट डीएसआर यानी गीली सीधी बोआई। यह खासतौर पर उन परिस्थितियों में उपयोगी है, जब बारिश देर से आती है और बोआई में देर हो जाती है या शुरुआती बाढ़ के कारण फसल खराब हो जाती है।

शैलेंद्र सिंह ढाका कृषि वैज्ञानिक, पीलीभीत ने बताया कि पारंपरिक रोपाई में भारी मजदूरी के साथ बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है, लेकिन डीएसआर ने धान की खेती का पूरा खेल बदल दिया है। इस तकनीक में नर्सरी, कीचड़ (पडलिंग) और रोपाई की झंझट है ही नहीं। विशेष मशीनों से बीज सीधे खेत में बोए जाते हैं। इस विधि में न सिर्फ 20–25 प्रतिशत पानी की बचत होती है, लगभग 20 प्रतिशत तक लागत भी कम हो जाती है।

# मिडिया कवरेज

## एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ संपन्न मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद रही मरौरी ब्लॉक प्रमुख सभ्यता वर्मा

**पीलीभीत (धारा न्यूज)**। किसान उत्पादक संगठनों का गठन व संवर्धन योजना के अंतर्गत एक दिवसीय किसान उत्पादक संगठन प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषि विज्ञान केंद्र टांडा बिजैसी न्यूरिया कला में संपन्न हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद रही मरौरी ब्लॉक प्रमुख सभ्यता वर्मा वैज्ञानिक डॉक्टर एसएस ढाका, वैज्ञानिक डॉक्टर संतोष गुप्ता, डॉ अमरजीत राठी, सीईओ सन्तोष गुप्ता सहित अन्य सम्मानित किसान भाई उपस्थित रहे हैं।

## जनपद की 9 ग्राम पंचायतों मे विकसित कृषि संकल्प अभियान का हुआ आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत।जनपद की ग्राम पंचायतों मे विकसित कृषि संकल्प अभियान का आयोजन किया गया हैं।इस दौरान किसानों को खरीफ मौसम में उगायी जाने वाली फसलों के बारे में जानकारी दी गई विकसित कृषि संकल्प अभियान के अन्तर्गत खरीफ मौसम में उगायी जाने वाली प्रमुख फसलों से सम्बन्धित आधुनिक कृषि तकनीकों एवं जलवायु परिवर्तन प्रभावरोधी कृषि पद्धतियों की जानकारी कृषकों को दी गई।अभियान के अन्तर्गत ग्राम पंचायत चाट डाग उर्फ वल्लेव पुर, देवीपुरा,घेरा रिछोला विकासखण्ड मरौरी प्रथम टीम,द्वितीय टीम ग्राम विदुआ कजांनाथ पटटी,खमरिया पुल विकासखण्ड ललौरीखेडा मे कार्यक्रम आयोजित किये हैं। इसी क्रम में तृतीय टीम ग्राम पचापंत आराजी वौरख, धनकुना विकास खण्ड अमरिया व दहगला विकास खंड मरौरी में कार्यक्रमों का अयोजन विकसित कृषि सकल्प अभियान में ग्राम देवीपुरा मे केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान बरेली के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 राज नरायन द्वारा खेती के साथ-साथ मुर्गीपालन,अण्डा उत्पादन का कार्य करके स्थिती को बहुत हद तक सुधारा जा सकता है।संस्थान द्वारा समय समय पर प्रशिक्षण किसानों को दिया जाता है।इससे होने वाले लाभ एवं सावधानियों पर विस्तार में चर्चा की इसी क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र पीलीभीत के प्रभारी वैज्ञानिक डा0 एसएस ढाका द्वारा धान की सीधे बुबाई से करने के किसान की काफी वचत हो जाती है। प्राकृतिक खेती जैविक कृषि को बढ़ावा देने गौ पालन करते पर विस्तार से चर्चा की।जिला कृषि अधिकारी नरेन्द्र पाल द्वारा कृषि की विभिन्न योजनाओं पर चर्चा की बढते हुए तापमान पर कृषि विभाग के अनुदान पर उपलब्ध सोलर पम्प खेती लिए बहुत लाभकारी साबित होगे कृषि वीज भण्डार के माध्यम से धान वीज पीआर-121 पीआर-128 अनुदान पर छूट पर उपलब्ध है। डा0 सौरभ तोमर द्वारा वागवानी पर चर्चा करते हुए फलहार वृक्ष लगाना आर्थिक मदद एवं व्यक्तिगत जीवन के लिए लाभकारी होता है पशुपालन द्वारा टीकाकरण की जानकारी दी 250 कृषको की सहभागिता रही हैं।

## पीलीभीत में बनेगा बासमती निर्यात विकास संस्थान

देवेंद्र देवा • जागरण

- टांडा बिजेसी की सात एकड़ भूमि की गई चयनित
- पहला केंद्र शुरू हो चुका है मेरठ में, पीलीभीत में खुलेगा दूसरा

**पीलीभीत** : मेरठ के बाद अब देश का दूसरा बासमती निर्यात विकास संस्थान पीलीभीत में बनेगा। इसके लिए राजकीय कृषि बीज संवर्धन प्रक्षेत्र टांडा बिजेसी की सात एकड़ भूमि का चयन कर लिया गया है। स्थानीय सांसद एवं केंद्रीय वाणिज्य-उद्योग इलेक्ट्रानिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री जितिन प्रसाद ने इसके लिए पैरवी की थी। उन्होंने बताया कि इस सेंटर से तराई में बासमती चावल के निर्यात तथा जैविक खेती को बढ़ावा मिलेगा।

तराई में मोटे धान की पैदावार अत्याधिक जबकि बासमती की बेहद कम है। मंत्री जितिन प्रसाद ने कुछ समय पूर्व मंत्रालय के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जनपद के धान उत्पादन किसानों एवं चावल निर्यातकों की स्थिति में सुधार की कार्ययोजना बनाएं, जिसके बाद अधिकारियों ने मेरठ की तरह बासमती सीड प्रोसेसिंग फैसीलिटी एंड आर्गेनिक ट्रेनिंग कम डेमो सेंटर की स्थापना का सुझाव दिया। उनकी सहमति के बाद जिलाधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह ने सात एकड़ भूमि की तलाश आरंभ कराई। बीते दिनों टनकपुर हाईवे किनारे स्थित राजकीय कृषि बीज संवर्धन प्रक्षेत्र टांडा बिजेसी की भूमि का चयन कर लिया गया। सात जून को जिलाधिकारी ने उत्तर प्रदेश के कृषि निदेशक को पत्र भेजकर सात एकड़ भूमि 70 वर्षों के लिए लीज पर दिए जाने के बारे में अवगत कराया। केंद्रीय वाणिज्य उद्योग मंत्रालय को भी इस संबंध में पत्र भेजा। भूमि चयन के बाद मंत्री जितिन प्रसाद ने मंत्रालय के अधिकारियों को जल्द से जल्द सेंटर की स्थापना करने का निर्देश दिया है।

**सेंटर में होंगे यह कार्य**

**बीज अनुसंधान एंव विकास** : उत्तर प्रदेश के जिन 17 जनपदों को बासमती उत्पादन के लिए जीआइ टैग मिला, उनमें पीलीभीत भी शामिल है। - **डा. एसएस ढाका**, वरिष्ठ वैज्ञानिक, राजकीय कृषि विज्ञान केंद्र

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संकल्प किसानों की आय दोगुणी करने का है। इस संकल्प को साकार करने के लिए केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय की पहल पर पीलीभीत में बासमती निर्यात विकास संस्थान की स्थापना करने का निर्णय लिया गया है। जनपद के किसानों, बीज निर्माता और चावल निर्यातकों की आय बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होगी। - **जितिन प्रसाद**, केंद्रीय वाणिज्य, उद्योग, इलेक्ट्रानिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री

बासमती धान की नई किस्मों पर शोध किया जाएगा, जो अधिक उत्पादन देने वाली एवं रोग प्रतिरोधक हों।

**बीज प्रसंस्करण और शुद्धिकरण** : उच्च गुणवत्ता वाले बासमती बीजों का शुद्धिकरण, ग्रेडिंग तथा पैकेजिंग की जाएगी। ताकि किसानों को प्रमाणित और शुद्ध बीज उपलब्ध हों।

**किसान प्रशिक्षण और जागरूकता**: किसानों को बासमती बीजों की उन्नत किस्मों जानकारी, बोआई विधियां, सिंचाई, खाद एवं कीटनाशक उपयोग आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा। बीज निर्माताओं और बासमती चावल के निर्यातकों को भी अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार पैकेजिंग आदि के बारे में प्रशिक्षित किया जाएगा।

# मिडिया कवरेज

**हिन्दुस्तान**

कृषि विज्ञान केंद्र टांडा बिजेसी में किसान मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन

## खेती में डिजिटल प्लेटफार्म के प्रयोग से मिलेगा फायदा : जितिन

न्यूरिया, संवाददाता। कृषि विज्ञान केंद्र टांडा बिजेसी में किसान मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसमें सैकड़ों किसानों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लाइव प्रसारण को भी सुना गया। प्रधानमंत्री ने बिहार के भांगलपुर से किसान सम्मान निधि की 19वीं किस्त जारी की है।

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्यमंत्री जितिन प्रसाद ने भाजपा जिलाध्यक्ष संजीव प्रताप सिंह समेत अन्य के साथ पहुंच कर किसानों को संबोधित किया। केंद्रीय राज्यमंत्री ने कहा कि सरकार कृषि क्षेत्र के विकास और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। उन्होंने जैविक खेती और डिजिटल प्लेटफार्म पर अधिक जोर दिया।

उन्होंने कहा कि सरकार कृषि क्षेत्र को डिजिटल बनाने के लिए कई योजनाएं चला रही है, जिससे किसान सीधे ऑनलाइन प्लेटफार्म से जुड़कर अपनी फसलों की सही कीमत प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कृषि मोबाइल एपऔर अन्य डिजिटल सेवाओं का अधिकाधिक उपयोग करने की अपील की। इसके साथ ही जैविक खेती को



कृषि विज्ञान केंद्र में प्रदर्शनी में बोलते केंद्रीय राज्यमंत्री जितिन प्रसाद।

बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्राकृतिक खाद, वर्मी कम्पोस्ट और जैविक कीटनाशकों के उपयोग पर जागरूक किया। इस अवसर पर किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों, जैविक खेती और नवीनतम सरकारी योजनाओं की जानकारी भी दी गई। इस मौके पर अधिकारी और किसान मौजूद रहे। इस मौके पर सीडीओ केके सिंह, एडीएम ऋतु पूनिया, डीडीओ संजय सिंह समेत भाजपा नेता रेखा सिंह परिहार, देव स्वरूप पटेल व कृषि विज्ञानी डा.एसएस ढाका समेत अन्य मौजूद रहे।

### रामचरित मानस पाठ में जितिन ने आरती की

बिलसंडा। केन्द्रीय मंत्री जितिन प्रसाद ने सोमवार शाम को नगर से सटे चरखौला गांव में आयोजित श्री रामचरित मानस पाठ में पहुंचकर आरती में हिस्सा लिया। प्रधान माया देवी, रामदास पाठक, शिवदास पाठक, एडवोकेट अवधेश पाठक, भाजपा नेता कुंवर महीप सिंह चंदेल, विक्रम गंगवार, सुमित गुप्ता, विकेश जायसवाल ने केंद्रीय मंत्री का स्वागत किया।


कृषि विज्ञान केंद्र में प्रदर्शनी में दूर-दूर से पहुंचे लोगों की भीड़।

## मरौरी ब्लॉक के गांवों में विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम आयोजित

### किसानों को कृषि विशेषज्ञों से मिला आधुनिक खेती का प्रशिक्षण

**सतरंगी दुनिया, पीलीभीत**

मरौरी विकास खंड के गांव लौकहा,जैतपुर और खाग में विकसित कृषि संकल्प अभियान का आयोजन किया गया। कृषि विभाग के अधिकारियों और विशेषज्ञों ने किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी दी।अभियान में किसानों को जैविक खेती और जल संरक्षण के तरीकों से अवगत कराया गया। साथ ही उन्नत बीजों के उपयोग के बारे में भी बताया गया। अधिकारियों ने विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए उन्नत खेती के तरीकों का प्रशिक्षण दिया।कार्यक्रम में किसानों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और अपने खेती के अनुभव साझा किए।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में मंगलवार को खाग गांव मे किसानों को संबोधित करते हुए केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान के डा एम पी सागर ने खेती के साथ साथ मे मुर्गीपालन अंडाउत्पादन एक सहायक आय का साधन बनाया जा सकता है। जिससे प्रतिदिन की नकद आमदनी आपके घरेलू खर्च में सहायक होगी।कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक डा० एस एस ढाका ने खेती को जहर मुक्त करने में किसान की भलाई है इसके दुष्परिणाम मिटटी और किसान होनों के लिए भयावह होते है। सरल तरीके से देशी खाद देशी गाय के माध्यम से खेती को जहर मुक्त करने का सरल उपाय है कृषि विभाग द्वारा उपलब्ध कराई जा रही 75 प्रतिशत अनुदान पर जिप्सम का प्रयोग किसानो को अवश्य करना चाहिए। किसानों को जिला कृषि रक्षा अधिकारी श्याम नरायन ने असली, नकली रसायनों की पहचान उर्वरक की पहचान की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया विश्वसनीय प्रतिष्ठान से उर्वरक व रसायन लेने का सुझाव दिया।जिला कृषि धिकारी नरेन्द्र पाल ने बढ़ते हुए तापमान से किसानो को निजात पाने का एक सस्ता उपाय 40 प्रतिशत पर कृषि विभाग द्वारा सोलर पम्प की उपलब्धता है। किसान को को कृषि विभाग की साइट पर अपना सोलर पम्प बुक कराकर आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। इफको प्रतिनिधि नैनो यूरिया, नैनो डीएपी नैनो जिंक के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं तरल की उपयोगिता पोधे पर अधिक प्रभावी है विस्तार से किसानों को समझाया। कार्यक्रम का संचालन खण्ड तकनीक प्रबंधक प्रदीप कुमार मिश्रा ने किया ।

कार्यक्रम में सहायक तकनीक प्रबंधक राजवीर, हरीश चन्द्र वर्मा, सुरेंद्र सिंह राना,प्रेम शंकर सहित सैकड़ो किसानों ने सहभागिता निभाई।

epaper **हिन्दुस्तान**


फसल अवशेष कार्यक्रम में बोलते हुए कृषि वैज्ञानिक डॉ.शैलेंद्र सिंह ढाका।

**पीलीभीत, संवाददाता।** राजकीय कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से फसल अवशेष प्रबन्धन के लिए उच्च प्राथमिक विद्यालय, सरौरी के विद्यार्थियों के लिए जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें किसानों जानकारी दी गई।

जागरुकता कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.शैलेंद्र सिंह ढाका ने विद्यार्थियों को बताया कि फसल काटने के बाद जो अवशेष खेत में बच जाते हैं। उन्हें जलाना नहीं चाहिए। इसके जलाने से वातावरण का प्रदूषण होता है। इसके साथ ही भूमि की उपरी सतह में उपस्थित लाभकारी जीवाणु भी जलकर नष्ट हो जाते हैं। फसल अवशेषों को खेत में ही मिला देने से भूमि के जीवांश कार्बन की मात्रा में वृद्धि होती है, जिससे भूमि की उर्वरता शक्ति बढ़ती है और उत्पादन अधिक लिया जा सकता है। कृषि वैज्ञानिक डॉ.ढाका ने बल दिया कि फसल अवशेष खेतों में मिला देने से किसान के खादों पर होने वाले खर्च में 2000 रुपये प्रति हेक्टेयर तक की बचत होती है। कृषि सस्य वैज्ञानिक डॉ. एएस राठी ने फसल अवशेषों को भूमि में मिलाने वाले अत्याधुनिक कृषि यंत्रों जैसे कि रोटरी स्लैशर, रिवर्सेबल एमबी प्लो, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर आदि के बारे में जानकारी दी। प्रधानाचार्य संतोष कुमार ने ने बताया कि बढ़ता वातावरण प्रदूषण और कम होती भूमि उर्वरता जैसी विकराल समस्याओं का समाधान फसल अवशेषों को जलाने के स्थान पर खेत में मिलाकर सड़ा देने से किया जा सकता है।

## स्कूली बच्चों को किया गया फसल अवशेष प्रबंधन के प्रति जागरूक

### चित्रकला प्रतियोगिता में विजयी छात्रों को किया गया सम्मानित

टेलीग्राम संवाद

पीलीभीत। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन उच्च प्राथमिक विद्यालय, सरौरी में किया गया। इस कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं को कृषि अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान और उनके उचित प्रबंधन के लाभों के बारे में जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. शैलेन्द्र सिंह ढाका ने बताया कि फसल कटाई के बाद बचे अवशेषों को जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ता है और मिट्टी में मौजूद लाभकारी जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि यदि इन अवशेषों को खेत में ही मिला दिया जाए तो मिट्टी की उर्वरता शक्ति बढ़ती है, जिससे फसल उत्पादन अधिक होता है।

**कृषकों को होगा आर्थिक लाभ**

डॉ. ढाका ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को खेत में मिलाने से खाद पर होने वाले खर्च में प्रति हेक्टेयर 2000 रुपये तक की बचत हो सकती है। इसके अलावा, सस्य वैज्ञानिक डॉ. ए.एस. राठी ने किसानों को रोटरी स्लैशर, रिवर्सेबल एम.बी. प्लो, हैप्पी सीडर और सुपर सीडर जैसे अत्याधुनिक कृषि यंत्रों की जानकारी दी, जिन्हें कृषि विभाग द्वारा 80% अनुदान पर उपलब्ध कराया जा रहा है।

**विद्यार्थियों को दी गई जिम्मेदारी**

विद्यालय के प्रधानाचार्य संतोष कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से बढ़ते वायु प्रदूषण और घटती भूमि उर्वरता की समस्याओं का समाधान केवल इन्हें खेत में मिलाने से ही संभव है। शिक्षिका पारुल जायसवाल ने बच्चों को प्रेरित किया कि वे अपने घर के बड़े-बुजुर्गों को भी इस विषय में जागरूक करें और उनसे फसल अवशेष जलाने के बजाय खेत में मिलाने की अपील करें।




**चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन**

कार्यक्रम के अंत में फसल अवशेष प्रबंधन पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें सागर ने प्रथम स्थान, अर्चना ने द्वितीय स्थान और गुलशन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेता छात्रों को शील्ड देकर सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम से विद्यार्थियों को कृषि और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में जागरूक करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया गया, जिससे वे अपने परिवार और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकें।

हिंदी दैनिक, जन एक्सप्रेस @janexpressnews janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

## गन्ना फसल का निरीक्षण : बीमारियों और कीटों से मुक्त पाया गया क्षेत्र

- पीलीभीत, बरखेड़ा व पूरनपुर चीनी मिल के आसपास गांवों का उपगन्ना आयुक्त बरेली ने किया निरीक्षण

जन एक्सप्रेस। पीलीभीत

आज उपगन्ना आयुक्त बरेली राजेश मिश्रा के नेतृत्व में पीलीभीत, बरखेड़ा एवं पूरनपुर चीनी मिल के आसपास स्थित गजरौला कलां, गजरौला खुर्द, नदहा, जरा जरी, मथना जसी, भैरों खुर्द, नागफन, बालकरणपुर, एमलिया, दयालपुर, मौधोटांडा, गुलरिया, रायपुर बिछपुरी, गुलाब टांडा, मकारंदपुर चौगान व बरही आदि गांवों में गन्ना फसल का व्यापक निरीक्षण किया गया।

**फसल की स्थिति सामान्य, कीट एवं बीमारी से मुक्त**

उपगन्ना आयुक्त बरेली राजेश मिश्रा ने निरीक्षण के दौरान बताया कि वर्तमान में गन्ना की फसल पूरी तरह से कीट एवं व्याधि रहित है। अभी तक किसी भी प्रकार की बीमारी या कीट के प्रकोप की सूचना नहीं मिली है। वर्तमान में वर्षा ऋतु चल रही है, जो गन्ना फसल के लिए अनुकूल मानी जाती है, हालांकि इस दौरान लाल सड़न और पोक्का बोइंग जैसी बीमारियों के फैलने की संभावना बनी रहती है।

**किसानों से अपील सजग और सतर्क रहें**

उन्होंने किसानों से आग्रह किया है कि यदि किसी किसान को गन्ना फसल में किसी भी प्रकार की बीमारी या कीट के लक्षण दिखाई दें, तो वे तुरंत गन्ना विकास विभाग या संबंधित चीनी मिल के अधिकारियों को सूचित करें। समय पर सूचनाएं मिलने से बीमारी के प्रसार को रोका जा सकता है।

**दवाओं की उपलब्धता और पंजीकरण की आवश्यकता**

राजेश मिश्रा ने बताया कि मण्डल की सभी गन्ना विकास समितियों पर कीटनाशकों व दवाओं की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध है। किसान भाइयों को इन दवाओं पर 50 प्रतिशत तक का अनुदान भी दिया जा रहा है। दवा खरीदने के लिए किसान अपना पंजीकरण तत्काल कराएं और पंजीकरण हेतु अपने सर्किल के गन्ना पर्यवेक्षक से संपर्क करें।

**गन्ना किस्म 0238 पर विशेष ध्यान**

निरिक्षण के दौरान यह भी बताया गया कि बरेली मण्डल में गन्ना किस्म 0238 का केवल 8 प्रतिशत क्षेत्रफल ही बचा है। यह किस्म लाल सड़न रोग से अधिक प्रभावित होती है, इसलिए जिन किसानों ने इस किस्म की फसल लगाई है, उन्हें विशेष सतर्कता बरतनी होगी।

**निरीक्षण में प्रशासनिक और वैज्ञानिक अधिकारियों की मौजूदगी**

इस निरीक्षण के दौरान खुशी राम भार्गव, जिला गन्ना अधिकारी पीलीभीत, डॉ. यस यस. ढाका (वैज्ञानिक, के.वी.के.), नरेंद्र पाल (जिला कृषि अधिकारी), ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक पीलीभीत एवं पूरनपुर, एल एच चीनी मिल के पुष्पेंद्र सिंह एवं कई गन्ना किसान उपस्थित रहे। इस निरीक्षण से किसानों में उत्साह और भरोसा बढ़ा है कि प्रशासन उनकी फसल सुरक्षा के प्रति सजग है और समय-समय पर उचित कदम उठाता रहेगा।